रिसाला न. : 139

वीरान मह़ल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

वीरान मह़ल

येह रिसाला (**वीरान मह़ल**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मकतबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मकतबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

वीरान महल[1]

शायद नफ़्स रुकावट डाले मगर आप (23 सफ़ह़ात) का येह रिसाला पूरा पढ़ कर अपनी आख़िरत का भला कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मुझ पर दिन भर में **एक हज़ार दुरूदे पाक** पढ़े वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले ।''

(اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج۲ ص۳۲۸ حديث۲۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बयान फ़रमाते हैं कि मेरा एक बार कूफ़ा जाना हुवा, वहां एक सरमाया दार के आ़लीशान महल पर नज़र पड़ी जिस से ऐ़शो तनआ़ुम ख़ूब झलक रहा था, दरवाज़े पर ग़ुलामों का झुरमट था और एक ख़ुशगुलू कनीज़ येह नग़मा अलाप रही थी :

اَلَا يَا دَارُ لَا يَدْخُلُكِ حُزْنٌ وَّلَا يَعْبَثُ بِسَاكِنِكِ الزَّمَانُ

---

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन दिन के बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (21, 22, 23 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1424 सि.हि. 17-18-19 अक्तूबर 2003 ई. इतवार मुलतान शरीफ़) में फ़रमाया । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

या'नी ऐ मकान ! तुझ में कभी ग़म दाख़िल न हो और तेरे अन्दर रहने वालों को ज़माना कभी भी पामाल न करे ।

कुछ अ़र्से बा'द मेरा फिर उस महल से गुज़र हुवा तो उस के दरवाज़े पर सियाही छा रही थी, नोकर चाकर ग़ाइब थे और उस **वीरान महल** पर बोसीदगी व शिकस्तगी के आसार नुमायां थे, ज़बाने ह़ाल मुरूरे ज़माना के हाथों उस की ना पाएदारी ज़ाहिर कर रही थी, फ़ना के क़लम ने उस की दीवारों पर आराइश व ज़ैबाइश की जगह बरबादी व इ़ब्रत को इ़बारत कर दिया था और अब वहां ख़ुशी व मसर्रत के बजाए फ़ना की लै में रन्जो वह़शत का नग़मा गूंज रहा था ! **मैं** ने उस महल की वह़शत अंगेज़ वीरानी के बारे में दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि सरमाया दार मर गया, ख़ुद्दाम रुख़्सत हो गए, भरा घर उजड़ गया, अ़ज़ीमुश्शान महल वीरान हो गया, जहां हर वक़्त लोगों की आमदो रफ़्त से रौनक़ रहती थी अब वहां सन्नाटा छा गया । **ह़ज़रते** सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मैं ने उस **वीरान महल** का दरवाज़ा खट खटाया तो एक कनीज़ की नह़ीफ़ (या'नी कमज़ोर) आवाज़ आई, मैं ने उस से पूछा : इस महल की शानो शौकत और इस की चमक दमक कहां गई ? इस की रोशिनयां, इस के जगमग जगमग करते कुमकुमे क्या हुए ? और इस में बसने वालों पर क्या बीती ? मेरे इस्तिफ़्सार पर वोह बूढ़ी कनीज़ अश्कबार हो गई और उस ने **वीरान महल** की दास्ताने ग़म निशान सुनाना शुरूअ़ की और कहा : इस के मकीन (या'नी रहने वाले) आ़रिज़ी तौ़र पर यहां रिहाइश पज़ीर थे, उन की तक़्दीर ने उन को क़स्र (या'नी महल) से क़ब्र में मुन्तक़िल कर दिया । इस **वीरान महल** में रहने वाले हर फ़र्दे ख़ुशह़ाल और इस के सारे अस्बाब व माल को ज़वाल लग गया, और येह कोई नई बात नहीं, दुन्या का तो येही दस्तूर है कि जो भी

इस में आता और ख़ुशियों का गन्ज पाता है बिल आख़िर वोह मौत का रन्ज पाता और वीरान क़ब्रिस्तान में पहुंच जाता है, जो इस दुनया से वफ़ा करता है येह उस के साथ बे वफ़ाई ज़रूर करती है। मैं ने उस कनीज़ से कहा : एक बार मैं यहां से गुज़रा था तो इस के अन्दर एक कनीज़ येह नग़मा गा रही थी :

اَلَا یَا دَارُ لَا یَدْخُلُكِ حُزْنٌ وَّلَا یَعْبَثُ بِسَاكِنِكِ الزَّمَانُ

या'नी ऐ मकान ! तुझ में कभी ग़म न दाख़िल हो और तेरे अन्दर रहने वालों को ज़माना कभी भी पामाल न करे।

वोह कनीज़ बिलक बिलक कर रोने लगी और बोली : वोह बद नसीब गुलूकारा मैं ही हूं, इस **वीरान महल** के मकीनों में से मेरे सिवा अब कोई ज़िन्दा नहीं रहा। फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींच कर कहा : **अफ़्सोस है उस पर जो येह सब कुछ देख कर भी** (फ़ानी) **दुन्या के धोके में मुब्तला रहते हुए अपनी मौत से ग़ाफ़िल हो जाए।**

(رَوْضُ الرَّیاحِین مع اضافہ ص۲۰۴)

हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "वीरान महल" की हिकायत अपने **मकीनों** (या'नी इस में रहने वालों) के फ़ना के हाथों मौत के घाट उतरने का कैसा इब्रत नाक मन्ज़र पेश कर रही है ! आह ! वोह लोग फ़ानी दुन्या की आसाइशों के बाइस मसरूरो शादां, ज़वाल व फ़ना से बे ख़ौफ़, मौत के तसव्वुर से बे परवा, लज़्ज़ाते दुन्या में बद मस्त थे। इस दारे ना पाएदार में यकायक मौत से हम कनार होने के अन्देशे से ना बलद, पुख़्ता व उम्दा मकानात की ता'मीरात करने, इन को दीदा ज़ैब अश्या से मुज़य्यन (Decorate) करने में मसरूफ़ थे, क़ब्र के अंधेरों और उस की

वह़्शतों से बे नियाज़ जगमग जगमग करती क़िन्दीलों और क़ुमक़ुमों से अपने मकानों को रोशन करने में मश्ग़ूल थे, अहलो इ़याल की आ़रिज़ी उन्सिय्यत, दोस्तों की वक़्ती मुसाह़बत और ख़ुद्दाम की ख़ुशामदाना ख़िदमत के भरम में क़ब्र की तन्हाई को भूले हुए थे। मगर आह ! फ़ना का बादल यकायक गरजा, मौत की आंधी चली और दुन्या में ता देर रहने की उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह गईं, उन के मसर्रतों और शादमानियों से **हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये,** रोश्नियों से जगमगाते क़ुसूर (या'नी मह़ल्लात) से घुप अंधेरी क़ुबूर में उन्हें मुन्तक़िल कर दिया गया। आह ! वोह लोग कल तक अहलो इ़याल की रौनक़ों में शादां व मसरूर थे और आज क़ुबूर की वह़्शतों और तन्हाइयों में मग़्मूम व रन्जूर हैं।

अजल ने न किसरा ही छोड़ा न दारा इसी से सिकन्दर से फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

क़ाबिले मज़म्मत कौन ?

इस ह़िकायत के आख़िर में कनीज़ की नसीह़त में भी इ़ब्रत के बे शुमार **मदनी फूल** हैं, मगर अफ़्सोस है उस पर जो दुन्या की नैरंगियां (या'नी फ़रेब कारियां) देखने के बा वुजूद भी इस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यक्सर ग़ाफ़िल हो जाए। वाक़ेई जो दुन्यावी ज़िन्दगी के धोके में पड़ कर अपनी मौत और क़ब्रो ह़श्र को भूल जाए और **अल्लाह** पाक को राज़ी करने के लिये अ़मल न करे, निहायत ही क़ाबिले मज़म्मत है। इस के धोके से बचने की हमें हमारा **अल्लाह** करीम ख़ुद तम्बीह फ़रमा

रहा है। चुनान्चे पारह 22 **सूरए फ़ातिर** की आयत 5 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَقفة

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी।

बांस का झोंपड़ा (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआ़मलात से आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ सकता। ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक सादा से **बांस के झोंपड़े** में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई। अ़र्ज़ की गई : बेहतर था कि आप कोई उ़म्दा मकान ता'मीर फ़रमा लेते। फ़रमाया : जिस ने इस दुन्या से चले जाना है उस के लिये येह भी बहुत है।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج٦٢ص٢٨٠)

फ़ानी मकान की सजावटें

अफ़्सोस ! मुसल्मानों की एक ता'दाद मौत की जानिब अ़दमे तवज्जोह के सबब आज दुन्या में उ़म्दा उ़म्दा मकानात की ता'मीरात में मुन्हमिक (या'नी बे इन्तिहा मसरूफ़) नज़र आ रही है। अपने मकानात को इंग्लिश टाइल्ड बाथ, अमरीकन किचन, मार्बल फ़्लोरिंग, वॉर्ड रोब, फुल ग्रिल वर्क, फुल वुड वर्क, एक्सट्रा वर्क से तो ख़ूब सजाया जा रहा है मगर नेकियों के ज़रीए अपनी क़ब्र की सजावट की त़रफ़ कोई तवज्जोह नहीं। एक अ़रबी शाइ़र ने किस क़दर दर्द भरे अन्दाज़ में हमें समझाने की कोशिश की है, मुलाह़ज़ा हो :

زَيَّـنْتَ بَيْتَكَ جَاهِلاً وَّعَمَرْتَهٗ وَلَـعَـلَّ غَيْرَكَ صَاحِبُ الْبَيْت

مَـنْ كَـانَـتِ الْاَيَّامُ سَائِرَةً بِهٖ فَـكَـأَنَّـهٗ قَـدْ حَـلَّ بِـالْمَوْت

وَالْـمَرْءُ مُرْتَهَنٌ بِسَوْفَ وَلَيْتَ وَهَلَاكُهٗ فِى السَّوْفِ وَاللَّيْت

فَلِلّٰهِ دُرُّ فَتًى تَـدَبَّـرَ اَمْـرَهٗ

فَـغَـدَا وَرَاحَ مُبَـادِرَ الْـمَـوْت

अश्आ़र का तरजमा ﴾1﴿ (दुन्या की ह़क़ीक़त और आख़िरत की मा'रिफ़त (या'नी पहचान) से) जहालत की बिना पर तू अपने मकान को ज़ीनत देने और सिर्फ़ इसी को आबाद करने में लगा हुवा है । और (तेरे मरने के बा'द) शायद तेरा ग़ैर इस मकान का मालिक हो ﴾2﴿ जिस को अय्याम (की गाड़ी क़ब्र की त़रफ़) खींचती चली जा रही है वोह गोया मौत से मिल चुका या'नी बहुत जल्द मर जाएगा ﴾3﴿ और आदमी (दुन्यावी मक़ासिद के ह़ुसूल में) उम्मीद व रजा के फन्दे में गिरिफ़्तार है ह़ालां कि इन ही झूटी उम्मीदों में इस की हलाकत पोशीदा है ﴾4﴿ उस जवान का अज्र **अल्लाह** पाक (के ज़िम्मए करम) पर है जिस ने अपने (क़ब्रो आख़िरत के) मुआ़मले की तदबीर की और सुब्हो शाम मौत की तय्यारी करने में जल्दी की ।

बुलन्द मकान ज़मीन बोस कर दिया (ह़िकायत)

सरकारे दो जहान, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उ़म्दा मकानात से किस क़दर बे रग़बती थी इस बात को ''अबू दावूद शरीफ़'' की इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये ! चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले गए हम भी साथ ही थे कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक **बुलन्द इमारत** मुलाह़ज़ा

की तो फ़रमाया : येह क्या है ? अ़र्ज़ की गई : येह फुलां अन्सारी की है । (येह सुन कर) मदीने के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए और येह बात क़ल्बे अत़्हर में रख ली । ह़त्ता कि उस इमारत का मालिक ह़ाज़िर हुवा और उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (लोगों की मौजूदगी में) सलाम अ़र्ज़ किया, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से ए'राज़ किया, उस (अन्सारी) ने येह अ़मल कई मरतबा किया यहां तक कि उस (अन्सारी) शख़्स ने अपने बारे में नाराज़ी (का इज़्हार) और ए'राज़ जान लिया तो उस ने जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब से येह कैफ़िय्यत बयान करते हुए कहा : **वल्लाह !** मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाराज़ पाता हूं। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने फ़रमाया कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए थे तो तुम्हारी इमारत देखी । (या'नी हमारा अन्दाज़ा येही है कि तुम से नाराज़ी का सबब तुम्हारी ता'मीर कर्दा बुलन्द इमारत है । येह सुन कर) वोह (अन्सारी) अपनी इमारत की त़रफ़ लौटे और उसे ढा कर ज़मीन बोस कर दिया । (ابوداؤد ج٤ ص٤٦٠ حديث٥٢٣٧ مُلَخَّصاً)

मेरी ज़िन्दगी का मक़्सद है हुज़ूर को मनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह है ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم । मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें न तो इमारत ढाने का ह़ुक्म दिया और न ही येह फ़रमाया कि इस त़रह़ की इमारत बनाना जाइज़ नहीं, उन सह़ाबी को सिर्फ़ अन्दाज़ा ही हुवा कि शायद ताजदारे

नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस इ़मारत के सबब मुझ से नाराज़ हो गए हैं, तो उन का येह ज़ेह्न बना कि येह इ़मारत मेरे और महबूब के दरमियान रुकावट बन गई लिहाज़ा उसे ढा दिया। इस ढाने में माल को बरबाद करना नहीं और न ही येह फ़ुज़ूल ख़र्ची है बल्कि अस्ल मक़्सूद महबूब को मनाना है, अगर इ़मारत ढाने से **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم राज़ी हो जाएं तो यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन सौदा निहायत ही सस्ता है, जनाबे ख़लील عَلَيْهِ السَّلَام तो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये फ़रज़न्द को ज़ब्ह करने के लिये तय्यार हो गए थे। (मिरआत, जि. 7, स. 21 मुलख़्ख़सन) ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल **ज़बीहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़ब्ह से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी वाक़िआ़ मश्हूरो मा'रूफ़ है। येह उन्हीं ह़ज़रात عَلَيْهِمَا السَّلَام के साथ ख़ास था अब कोई ख़्वाब वग़ैरा में हुक्म पा कर अपनी औलाद को ज़ब्ह नहीं कर सकता, अगर करेगा तो क़ातिल और जहन्नम का ह़क़दार ठहरेगा।

नहीं चाहता हुकूमत नहीं सल्तनत है पाना
मेरी ज़िन्दगी का मक़्सद है हुज़ूर को मनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पुर असरार पथ्थर (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिय्या तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक मस्जिदे ह़राम शरीफ़ में मौजूद था कि उस के पास **एक पथ्थर** लाया गया जिस पर कोई तह़रीर कन्दा थी। उस ने ऐसे शख़्स को बुलाने का कहा जो इस को पढ़ सके। चुनान्चे मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ लाए और उसे पढ़ा, उस पर लिखा था : ''ऐ इब्ने आदम ! अगर तू अपनी मौत के क़रीब होने को जान ले तो लम्बी लम्बी उम्मीदों से कनारा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

कशी इख़्तियार कर के अपने नेक अ़मल में ज़ियादती का सामान करे और ह़िर्स व लालच और दुन्या कमाने की तदबीरें कम कर दे। (याद रख!) अगर तेरे क़दम फिसल गए तो रोज़े क़ियामत तुझे नदामत का सामना होगा, तेरे अहलो इ़याल तुझ से बेज़ार हो जाएंगे और तुझे तक्लीफ़ में मुब्तला छोड़ देंगे, तेरे मां बाप और अ़ज़ीज़ व अह़बाब भी तुझ से जुदा हो जाएंगे, तेरी औलाद और क़रीबी रिश्तेदार तेरा साथ न देंगे। फिर तू लौट कर दुन्या में आ सकेगा न नेकियों में इज़ाफ़ा कर सकेगा। पस उस ह़स्रतो नदामत की साअ़त से पहले आख़िरत के लिये अ़मल कर ले।"

वोह है ऐ़शो इ़शरत का कोई मह़ल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह्ल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

अ़क़्ल मन्द के करने का काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि वोह अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का जाएज़ा ले, अपने गुनाहों पर नादिम हो कर उन से सच्ची तौबा करे, ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने की उम्मीद के धोके में न पड़े बल्कि क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़ौरन नेक आ'माल में लग जाए, दौलतो माल और अहलो इ़याल की मह़ब्बत में न नेकियां छोड़े न गुनाहों में पड़े कि इन सब का साथ तो दम भर का है और नेकियां क़ब्रो आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी।

अ़ज़ीज़, अह़बाब, साथी, दम के हैं, सब छूट जाते हैं
जहां येह तार टूटा, सारे रिश्ते टूट जाते हैं

जब किसी दुन्यवी शै से ख़ुशी ह़ासिल हो तो......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसी फ़िक्रे आख़िरत उसी वक़्त

ह़ासिल हो सकती है जब कि हम मौत को हर वक़्त अपनी आंखों के सामने रखें और इस दारे फ़ानी (या'नी ख़त्म हो जाने वाली दुन्या) की फ़ानी अश्या की दिल में कुछ वक़्अ़त (या'नी क़द्रो क़ीमत) ही न समझें, बल्कि जब भी इस दुन्या की किसी चीज़ को देख कर ख़ुशी ह़ासिल हो तो फ़ौरन येह बात याद करें कि येह चीज़ अ़न्क़रीब मुझे छोड़ देगी या ख़ुद मुझे इसे छोड़ कर जाना पड़ जाएगा।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर　　और उठते चले जा रहे हैं बराबर
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र　　यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

बा रौनक़ घर देख कर रो पड़े (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّمِيْع ने एक दिन अपने **बा रौनक़ घर** को देखा तो ख़ुश हो गए मगर फ़ौरन रोना शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया : "ऐ ख़ूब सूरत मकान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मौत न होती तो मैं तुझ से ख़ुश होता और अगर आख़िर कार तंग क़ब्र में जाना न होता तो दुन्या और इस की रंगीनियों से मेरी आंखें ठन्डी होतीं।" येह फ़रमाने के बा'द इस क़दर रोए कि हिचकियां बंध गईं।

(اِتحافُ السّادَة للزّبیدی ج۱٤ ص۳۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काम्याब व अ़क़्ल मन्द वोही है जो दूसरों को मरता देख कर अपनी मौत याद करे और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी कर ले। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : اَلسَّعِیْدُ مَنْ وُّعِظَ بِغَیْرِہٖ या'नी सआ़दत मन्द वोह है जो दूसरों से नसीह़त ह़ासिल करे। (ایضاً)

www.dawateislami.net

दूसरों की मौत का तसव्वुर

ग़फ़्लत के साथ मौत को याद करने से येह सआ़दत ह़ासिल नहीं होगी कि इस त़रह़ तो इन्सान हमेशा जनाज़े देखता ही रहता है और कभी कभी मय्यित को अपने हाथों से क़ब्र में भी उतारता है। **मौत का तसव्वुर** इस त़रह़ कीजिये कि तन्हाई में दिल को हर त़रह़ के दुन्यावी ख़यालात से पाक कर के अपने उन दोस्तों और रिश्तेदारों को याद कीजिये जो वफ़ात पा चुके हैं, तसव्वुर ही तसव्वुर में उन फ़ौत शुदगान में से बारी बारी हर एक का चेहरा सामने लाइये और उन के ह़स्बे ह़ाल ख़याल कीजिये कि वोह किस त़रह़ दुन्या में अपने अपने मन्सब व काम में मश्ग़ूल, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे दुन्यावी ता'लीम के ज़रीए मुस्तक़्बिल की बेहतरी के लिये कोशां थे और ऐसे कामों की तदबीर में लगे थे जो शायद सालहा साल तक मुकम्मल न हो सकें, दुन्यावी कारोबार के लिये वोह त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त किया करते थे, वोह सिर्फ़ इस दुन्या ही के लिये कोशिशों में मसरूफ़ थे, इसी की आसाइशें उन्हें मह़बूब और इसी का आराम उन्हें मरग़ूब था। वोह यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं है, मौत से ग़ाफ़िल, ख़ुशियों में बद मस्त और खेल तमाशों में हर दम मगन थे। उन के कफ़न बाज़ार में आ चुके थे लेकिन वोह इस से बे ख़बर दुन्या की रंगीनियों में गुम थे। आह! इसी बे ख़बरी के आ़लम में यकायक उन्हें मौत ने आ लिया और वोह अंधेरी क़ब्रों में उतार दिये गए। उन के मां बाप ग़म से निढाल हो गए, उन की बेवाएं बेह़ाल हो गईं, उन के बच्चे बिलक्ते रह गए, मुस्तक़्बिल के ह़सीन ख़्वाबों का आईना चक्ना चूर हो गया, उम्मीदें मल्या मेट हो गईं, उन के काम अधूरे रह गए, दुन्या के लिये उन की सब मेह़नतें राएगां गईं। वुरसा उन के अम्वाल तक़्सीम कर के मज़े से खा रहे हैं और उन को भूल चुके हैं।

दूसरों की क़ब्र का तसव्वुर

इस तसव्वुर के बा'द अब उन की क़ब्र के ह़ालात के बारे में ग़ौर कीजिये कि उन के बदन कैसे गल सड़ गए होंगे, आह ! उन के ह़सीन चेहरे कैसे मस्ख़ हो कर बिगड़ चुके होंगे, वोह खिलखिला कर हंसते थे तो मुंह से फूल झड़ते थे, मगर आह ! अब उन के वोह चमकीले ख़ूब सूरत दांत झड़ चुके होंगे और मुंह में पीप पड़ गई होगी, उन की मोटी मोटी दिलकश आंखें उबल कर रुख़्सारों पर बह गई होंगी, संवार संवार कर रखे हुए उन के रेशम जैसे बाल झड़ कर क़ब्र में बिखर गए होंगे, उन की बारीक ऊंची ख़ूब सूरत नाक में कीड़े घुसे हुए होंगे, उन के गुलाब की पंखड़ियों की मानिन्द पतले पतले नाज़ुक होंटों को कीड़े खा रहे होंगे। वोह नन्हे नन्हे बच्चे जिन की तुतली बातों से ग़मज़दा दिल खिल उठते थे क़ब्र में उन की ज़बानों पर कीड़े चिमटे होंगे, नौ जवानों के क़ाबिले रश्क तुवाना, वरज़िशी जिस्म ख़ाक में मिल गए होंगे, उन के तमाम जोड़ अलग अलग हो चुके होंगे।

अपनी सकरात, मौत, ग़ुस्ल व कफ़न, जनाज़ा व क़ब्र का दर्दनाक तसव्वुर

येह ''तसव्वुर'' करने के बा'द येह सोचिये कि आह ! येही ह़ाल अ़न्क़रीब मेरा भी होने वाला है, मुझ पर भी नज़्अ़ (सकरात) की कैफ़िय्यत त़ारी होगी, हाए ! नज़्अ़ की सख़्तियां !! मौत का एक झटका तलवार के हज़ार वार से सख़्त होगा !!! आंखें छत पर लगी होंगी, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब जम्अ़ होंगे, मां ''मेरा लाल, मेरा लाल'' कह रही होगी, बाप मुझे ''बेटा बेटा'' कह कर पुकार रहा होगा, बहनें ''भय्या भय्या'' की सदाएं लगा रही होंगी। चाहने वाले आहें और सिस्कियां भर रहे होंगे, फिर

इसी चीख़ो पुकार के पुरहौल माहोल में **रूह क़ब्ज़** कर ली जाएगी । अ़ज़ीज़ों में कोहराम मच जाएगा, कोई आगे बढ़ कर मेरी आंखें बन्द कर देगा, मुझ पर कपड़ा उढ़ा दिया जाएगा । फिर **ग़स्साल** को बुलाया जाएगा, मुझे तख़्ते पर लिटा कर ग़ुस्ल दिया जाएगा और **कफ़न** पहनाया जाएगा, आहो फ़ुग़ां के शोर में घर से मेरा **जनाज़ा** रवाना होगा, मैं ने जिस घर के अन्दर सारी उ़म्र बसर की, कल तक जिन्हों ने नाज़ उठाए, आज वोही मेरा जनाज़ा उठा कर क़ब्रिस्तान की त़रफ़ चल पड़ेंगे, फिर मुझे क़ब्र में उतार कर अपने हाथों से मुझ पर मिट्टी डालेंगे, आह ! फिर क़ब्र की तारीकियों में मुझे तन्हा छोड़ कर सब के सब पलट जाएंगे, मेरा दिल बहलाने के लिये कोई भी वहां न ठहरेगा । हाए ! हाए ! फिर क़ब्र में मेरा जिस्म गलना सड़ना शुरूअ़ हो जाएगा, इसे कीड़े खाना शुरूअ़ कर देंगे, वोह कीड़े पता नहीं मेरी सीधी आंख पहले खाएंगे या कि उलटी आंख, मेरी ज़बान पहले खाएंगे या मेरे होंट, हाए ! हाए ! मेरे बदन पर किस क़दर आज़ादी के साथ कीड़े रींग रहे होंगे, नाक, कान और आंखों वग़ैरा में घुस रहे होंगे । **यूं** अपनी मौत और क़ब्र के ह़ालात का बारी बारी तसव्वुर बांधिये, क़ब्र के दबाने **मुन्कर नकीर** की आमद, उन के सुवालात और क़ब्र के अ़ज़ाबात के ख़यालात दिल में लाइये और अपने आप को इन पेश आने वाले मुआ़मलात से डराइये । **इस** त़रह़ **मौत का तसव्वुर** करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल में मौत का एह़सास पैदा होगा, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ेह़न बनेगा, मौत को याद करने के लिये महीने में कम अज़ कम एक बार अंधेरा कर के या तन्हाई में इसी **वीरान महल** नामी बयान का केसिट सुनना नीज़ येह अश्आ़र पढ़ना सुनना اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेह़द मुफ़ीद रहेगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

मौत की याद दिलाने वाले अश्आ़र

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार
मुझे में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख मैं हूं अंधेरी कोठड़ी
तुझ को होगी मुझ में सुन वह़शत बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा
हां मगर आ'माल लेता आएगा
नर्म बिस्तर घर पे ही रह जाएंगे
तुझ को फ़र्शे ख़ाक पर दफ़्नाएंगे
घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएगा
बे अ़मल ! बे इन्तिहा घबराएगा
काम मालो ज़र नहीं कुछ आएगा
ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा
जब तेरे साथी तुझे छोड़ आएंगे
क़ब्र में कीड़े तुझे खा जाएंगे
क़ब्र में तेरा कफ़न फट जाएगा
याद रख नाज़ुक बदन फट जाएगा
तेरा इक इक बाल तक झड़ जाएगा
ख़ूब सूरत जिस्म सब सड़ जाएगा
आह ! उबल कर आंख भी बह जाएगी
खाल उधड़ कर क़ब्र में रह जाएगी
सांप बिच्छू क़ब्र में गर आ गए !
क्या करेगा बे अ़मल गर छा गए !

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 711, 712)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोते रोते हिचकियां बंधी हुई थीं (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن मौत व क़ब्रो आख़िरत को पेशे नज़र रखा करते थे, येही वज्ह है कि वोह गुनाहों से मुज्तनिब (या'नी दूर) और नेकियों पर मुस्तइ़द (या'नी तय्यार) रहते और इस दारे फ़ना की आ़रिज़ी लज़्ज़तों में मुन्हमिक हो कर मुत्मइन हो जाने के बजाए ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या कनां रहते । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشَّافِي फ़रमाते हैं कि हम ह़ज़रते आ़मिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुए । **रोते रोते उन की हिचकियां बंधी हुई थीं,** हम ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाने लगे : मुझे उस (त़वील तरीन) रात का ख़ौफ़ रुला रहा है जिस की सुब्ह़ यौमे क़ियामत है, या'नी क़ब्र की रात जूं ही ख़त्म होगी क़ियामत का दिन शुरूअ़ हो जाएगा लिहाज़ा इस के होशरुबा तसव्वुर ने तड़पा रखा है । (اَلْمجالسة ج۱ ص۱۹۹)

मौत की याद क्यूं ज़रूरी है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ब्रो ह़श्र के अह्वाल को सामने रख कर हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن हमें भी मौत की याद और इस की आमद से क़ब्ल इस की तय्यारी की तरग़ीब दिलाते हैं । चुनान्चे ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : वोह शख़्स कि जिस को मौत से शिकस्त खानी हो मिट्टी जिस का बिछोना, कीड़े जिस के अनीस (या'नी साथी), मुन्कर नकीर जिस के मुम्तह़िन (या'नी इम्तिह़ान लेने वाले), क़ब्र जिस का ठिकाना, ज़मीन का पेट जिस की क़ियाम गाह, क़ियामत जिस की वा'दा गाह और जन्नत या जहन्नम जिस का मौरिद (या'नी पहुंचने की जगह) हो उसे सिर्फ़ मौत ही की फ़िक्र होनी चाहिये वोह सिर्फ़ इसी का ज़िक्र करे, इसी के लिये तय्यारी करे, इसी की तदबीर करे, इसी का मुन्तज़िर रहे और ह़क़ येह है कि अपने आप को फ़ौत शुदा लोगों में शुमार करे और ख़ुद को मरा हुवा तसव्वुर करे, क्यूं कि, जो चीज़ आ कर रहेगी वोह क़रीब ही है । **(اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ ص١٩١)**

नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''अ़क़्ल मन्द वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और मौत के बा'द के मुआ़मलात के लिये तय्यारी करे ।'' **(ترمذی ج٤ ص٢٠٧ حدیث ٢٤٦٧)**

मिज़ाज पुर्सी पर ग़शी

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن मौत और इस दुन्या से कूच कर जाने को बहुत कसरत से याद करते बल्कि बसा अवक़ात उन पर मौत और क़ब्रो ह़श्र की इस फ़िक्र व ख़ौफ़ का ऐसा ग़लबा होता कि उन पर बेहोशी त़ारी हो जाती । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشَّافِى (से जब कोई अ़र्ज़ करता : क्या ह़ाल है ? तो) फ़रमाया करते : मौत जिस

का मौइद (या'नी वा'दे का वक़्त), ज़मीन के नीचे जिस का ठिकाना, क़ब्र जिस का घर, कीड़े जिस के अनीस (या'नी साथी) हों और इसी के साथ साथ उसे अल फ़ज़ऊल अक्बर (बड़ी घबराहट या'नी क़ियामत) का भी इन्तिज़ार हो, उस का ह़ाल क्या होगा ? येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर रिक़्क़त त़ारी हो जाती ह़त्ता कि रोते रोते बेहोश हो जाते। (المستطرف ج۲ ص ٤٧٧)

सुब्ह़ किस ह़ाल में की ? (ह़िकायत)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से किसी ने पूछा : आप ने सुब्ह़ कैसे की ? फ़रमाया : उस शख़्स की सुब्ह़ किस ह़ाल में होगी जो एक घर (या'नी दुन्या) से दूसरे घर (या'नी आख़िरत) की त़रफ़ जाने वाला हो और कुछ पता न हो कि जन्नत में जाना है या दोज़ख़ ठिकाना है। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٣٠٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين की मुबारक मदनी फ़िक्र से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हुए मौत और आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह्न बनाएं और इस बे सबात (या'नी कमज़ोर), आ़रिज़ी और फ़ानी दुन्या पर ए'तिमाद व इत्मीनान के बजाए आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहें।

आबाद मकान वीरान हो जाएंगे

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عليهِ رَحْمَةُ الْعَزِيْز ने अपने एक ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! दुन्या तुम्हारा बाक़ी रहने वाला ठिकाना नहीं है, येह तो वोह दारे ना पाएदार है जिस के लिये **अल्लाह** पाक ने फ़ना होना और इस के रहने वालों पर यहां से रुख़्सत हो जाना लिख दिया है। अ़न्क़रीब मज़बूत़ और आबाद मकान टूट फूट कर वीरान हो जाएंगे, और इन मकानात के कितने ही ऐसे मकीन (या'नी रहने वाले) हैं जिन पर रश्क किया जाता है ब उ़ज्लत तमाम (या'नी

जल्द तर) रुख़्सत हो जाएंगे। पस ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक तुम पर रह़्म फ़रमाए इस (दुन्या) में से उ़म्दा चीज़ (या'नी नेकियां) ले कर अच्छे ह़ाल में निकलो और तोशए सफ़र ले लो। पस बेहतरीन तोशा तक़्वा व परहेज़ गारी है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ ص٢٠١)

दुन्या बरबाद हो कर रहेगी !

करोड़ों शाफ़िइ़य्यों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने एक शख़्स को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "बेशक दुन्या फिसल्ने की जगह और ज़िल्लत का घर है, इस की आबादी बरबाद होने वाली और इस के साकिनीन या'नी बाशिन्दे क़ब्रों में पहुंचने वाले हैं, इस से जो कुछ जम्अ़ किया है वोह हर सूरत इस से जुदा होना है और इस की दौलत मन्दी, तंगदस्ती में बदलने वाली है, इस में ज़ियादती ह़क़ीक़त में तंगी है और इस में तंगी दर अस्ल आसानी है। पस, **अल्लाह** पाक की बारगाह में घबरा कर तौबा कर और उस के अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ पर राज़ी रह, दारे बक़ा (या'नी आख़िरत) के अज्र को दारे फ़ना (या'नी दुन्या) के बदले में ज़ाएअ़ न कर, तेरी ज़िन्दगी ढलता साया और गिरती दीवार है, अपने अ़मल में ज़ियादती और अमल (या'नी दुन्यावी उम्मीद) में कमी कर।" (مناقبُ الشّافعی للبیهقی ج٢ص١٧٨)

आज अ़मल का मौक़अ़ है !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने एक मरतबा कूफ़े में ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "बेशक तुम्हारे बारे में मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं तुम लम्बी लम्बी उम्मीदें न बांध बैठो और ख़्वाहिशात की पैरवी में न लग जाओ, याद रखो ! लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुला देती हैं, और ख़बरदार ! नफ़्सानी ख़्वाहिशात

की पैरवी राहे ह़क़ से भटका देती है, ख़बरदार ! दुन्या अ़न्क़रीब पीठ फैरने वाली और आख़िरत जल्द आने वाली है, आज अ़मल का दिन है ह़िसाब का नहीं और कल ह़िसाब का दिन होगा, अ़मल का नहीं।''

(اَیْضاً ص۵۸)

दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब से आख़िरी ख़ुत्बा जो इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी है : ''**अल्लाह** पाक ने तुम्हें दुन्या महज़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए़ आख़िरत की तय्यारी करो, इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ, बेशक दुन्या महज़ फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूं कि दुन्या का रिश्ता क़त़्अ़ होने वाला है और बेशक **अल्लाह** पाक की त़रफ़ लौटना है। **अल्लाह** पाक से डरो क्यूं कि उस का डर उस के अ़ज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और **अल्लाह** पाक तक पहुंचने का ज़रीआ़ है।[1]''

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना चल दिये दुन्या से सब शाहो गदा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान के आख़िर में **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।'' (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

[1] مناقبُ الشّافعی للبیهقی ج۲ ص۱۷۸۔

www.dawateislami.net

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''सफ़ेद कफ़न में कफ़नाओ'' के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से कफ़न के 16 मदनी फूल

6 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ ''जो मय्यित को कफ़न दे तो उस के लिये मय्यित के हर बाल के बदले में एक नेकी है।''[1] ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से ''जो मय्यित को कफ़न दे'' के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ''जिस ने अपने माल से मय्यित के कफ़न का इन्तिज़ाम किया''[2] ﴿2﴾ जो मय्यित को कफ़न दे **अल्लाह** पाक उसे जन्नत के बारीक और मोटे रेशम का लिबास पहनाएगा[3] ﴿3﴾ ''जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न दे, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा जिस दिन मां के पेट से पैदा हुवा था।''[4] इस ह़िस्सए ह़दीस ''नाक़िस बात'' से मुराद येह है कि : ''जो बात ज़ाहिर करने के क़ाबिल न हो जैसे चेहरे का रंग सियाह हो जाना'' ﴿4﴾ अपने मुर्दों को अच्छा कफ़न दो क्यूं कि वोह अपनी क़ब्रों में आपस में मुलाक़ात करते और (अच्छे कफ़न से) तफ़ाख़ुर करते (या'नी ख़ुश होते) हैं[5] ﴿5﴾ जब तुम में से कोई अपने भाई को कफ़न दे, तो उसे अच्छा कफ़न दे[6] ﴿6﴾ अपने मुर्दों को सफ़ेद कफ़न में कफ़नाओ।[7]

कफ़न पहनाने की निय्यत

कफ़न पहनाने की निय्यत : रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत

[1] تاریخ بغداد ج٤ ص٢٦٣ [2] التیسیر ج٢ ص٤٤٢ - [3] المستدرك ج ١ ص ٦٩٠ حدیث ١٣٨٠ - [4] ابن ماجه ج٢ ص٢٠١ حدیث ١٤٦٢ - [5] الفردوس ج١ ص٩٨ حدیث٣١٧ - [6] مسلم ص٤٧٠ حدیث٩٤٣ - [7] ترمذی ج٢ ص٣٠١ حدیث٩٩٦ -

कमाने के लिये अपनी मौत के बा'द ख़ुद को पहनाए जाने वाले कफ़न को याद करते हुए अदाए फ़र्ज़ के लिये मय्यित को सुन्नत के मुत़ाबिक़ कफ़न पहनाऊंगा ۞ मय्यित को कफ़न देना "फ़र्ज़े किफ़ाया" है[1] या'नी किसी एक के देने से सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए (या'नी सब के सर से फ़र्ज़ उतर गया) वरना जिन जिन को ख़बर पहुंची थी और कफ़न न दिया वोह सब गुनाहगार होंगे।

मर्द का मस्नून कफ़न

۞ (1) लिफ़ाफ़ा या'नी चादर (2) इज़ार या'नी तहबन्द (3) क़मीस या'नी कफ़नी। **औ़रत** के लिये इन तीन के साथ साथ मज़ीद दो येह हैं : (4) ओढ़नी (5) सीनाबन्द। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۶۰) ۞ जो ना बालिग़ ह़द्दे शह्वत[2] को पहुंच गया वोह बालिग़ के ह़ुक्म में है या'नी बालिग़ को कफ़न में जितने कपड़े दिये जाते हैं इसे भी दिये जाएं और इस से छोटे लड़के को एक कपड़ा और छोटी लड़की को दो कपड़े दे सकते हैं और लड़के को भी दो कपड़े दिये जाएं तो अच्छा है और बेहतर येह है कि दोनों को पूरा कफ़न दें अगर्चे एक दिन का बच्चा हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 819) ۞ सिर्फ़ उ़लमा व मशाइख़ को बा इ़मामा दफ़्न किया जा सकता है, आ़म लोगों की मय्यित को मअ़ इ़मामा दफ़्नाना मन्अ़ है। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 4) ۞ मर्द के बदन पर ऐसी ख़ुश्बू लगाना जाइज़ नहीं जिस में ज़ा'फ़रान की आमेज़िश हो औ़रत के लिये जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 821) ۞ जिस ने एह़राम बांधा (और इसी ह़ालत में वफ़ात पाई) है उस के बदन पर भी ख़ुश्बू लगाएं और उस का मुंह और सर कफ़न से छुपाया जाए। (ऐज़न)

---

1 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 817. **2 :** ह़द्दे शह्वत लड़कों में येह कि उस का दिल औ़रतों की त़रफ़ रग़बत करे और लड़की में येह कि उसे देख कर मर्द को उस की त़रफ़ मैलान (या'नी ख़्वाहिश) पैदा हो और इस का अन्दाज़ा लड़कों में बारह साल और लड़कियों में नव बरस है। (ह़ाशियए बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 819)

कफ़न की तफ़्सील

❁ ﴾1﴿ **लिफ़ाफ़ा :** (या'नी चादर) या'नी मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें ﴾2﴿ **इज़ार :** (या'नी तहबन्द) चोटी (या'नी सर के शुरूअ़) से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़े से इतना छोटा जो बन्दिश के लिये ज़ाइद था ﴾3﴿ **क़मीस :** (या'नी कफ़नी) गरदन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों। मर्द व औ़रत की कफ़नी में फ़र्क़ है, **मर्द** की कफ़नी कन्धों पर चीरें और **औ़रत** के लिये सीने की त़रफ़ ﴾4﴿ **ओढ़नी :** तीन हाथ या'नी डेढ़ गज़ की होनी चाहिये ﴾5﴿ **सीनाबन्द :** पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 818) उ़मूमन तय्यार कफ़न ख़रीद लिया जाता है इस का मय्यित के क़द के मुत़ाबिक़ मस्नून साइज़ का होना ज़रूरी नहीं, येह भी हो सकता है कि इतना ज़ियादा हो कि इसराफ़ में दाख़िल हो जाए, लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि थान में से ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा काटा जाए ❁ कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ईदैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मयके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 818)

कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

❁ ग़ुस्ल देने के बा'द आहिस्ता से बदन किसी पाक कपड़े से पोंछ लीजिये ताकि कफ़न तर न हो, कफ़न को एक या तीन या पांच या सात बार धूनी दीजिये, इस से ज़ियादा नहीं, फिर इस त़रह़ बिछाइये कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर इस पर तहबन्द और इस के ऊपर कफ़नी रखिये, अब मय्यित को इस पर लिटाइये और कफ़नी पहनाइये, अब सर, दाढ़ी (और दाढ़ी न हो तो ठोड़ी) और बक़िय्या तमाम जिस्म पर ख़ुश्बू मलिये, वोह आ'ज़ा जिन पर सज्दा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक,

हाथों, घुटनों और क़दमों पर काफ़ूर लगाइये। फिर **इज़ार** या'नी तहबन्द लपेटिये, पहले बाईं या'नी उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से। फिर **लिफ़ाफ़ा** भी इसी त़रह़ पहले बाईं या'नी उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से लपेटिये ताकि सीधा ऊपर रहे। सर और पाउं की त़रफ़ बांध दीजिये कि उड़ने का अन्देशा न रहे। **औरत** को "कफ़नी" पहना कर उस के बाल दो ह़िस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दीजिये और **ओढ़नी** आधी पीठ के नीचे से बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर निक़ाब की त़रह़ डाल दीजिये कि सीने पर रहे कि उस का त़ूल (या'नी लम्बाई) आधी पीठ से सीने तक है और अ़र्ज़ (या'नी चौड़ाई) एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक है फिर ब दस्तूर **इज़ार व लिफ़ाफ़ा** लपेटिये फिर सब के ऊपर **सीनाबन्द** पिस्तान के ऊपर से रान तक ला कर बांधिये। (मज़ीद तफ़्सीलात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 817 ता 822 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये)

सुन्नतें सीखने के लिये मकतबतुल मदीना की दो किताबें (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो *सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो*
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो *ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब
30 रबीउ़ल आख़िर 1439 सि.हि.
18-01-2018

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा
हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये !	3
क़ाबिले मज़म्मत कौन ?	4
बांस का झोंपड़ा (ह़िकायत)	5
फ़ानी मकान की सजावटें	5
बुलन्द मकान ज़मीन बोस कर दिया (ह़िकायत)	6
मेरी ज़िन्दगी का मक़्सद है हु़ज़ूर को मनाना	7
पुर असरार पथ्थर (ह़िकायत)	8
अ़क़्ल मन्द के करने का काम	9
जब किसी दुन्यवी शै से ख़ुशी ह़ासिल हो तो......	9
बा रौनक़ घर देख कर रो पड़े (ह़िकायत)	10
दूसरों की मौत का तसव्वुर	11
दूसरों की क़ब्र का तसव्वुर	12
अपनी सकरात, मौत, ग़ुस्ल व कफ़न, जनाज़ा व क़ब्र का दर्दनाक तसव्वुर	12
मौत की याद दिलाने वाले अश्आ़र	14
रोते रोते हिचकियां बंधी हुई थीं (ह़िकायत)	14
मौत की याद क्यूं ज़रूरी है !	15
मिज़ाज पुर्सी पर ग़शी	15
सुब्ह़ किस ह़ाल में की ? (ह़िकायत)	16
आबाद मकान वीरान हो जाएंगे	16
दुन्या बरबाद हो कर रहेगी !	17
आज अ़मल का मौक़अ़ है !	17
दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है	18
कफ़न के 16 म-दनी फूल	19
मआख़िज़ो मराजेअ़	23

مآخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالتراث قاہرہ	مناقب الشافعی		قرآن پاک
دارالفکر بیروت	روض الریاحین	دارابن حزم بیروت	مسلم
دارالکتاب العربی بیروت	تنبیہ الغافلین	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
دارالکتب العلمیۃ بیروت	المجالسۃ	دارالفکر بیروت	ترمذی
دارالکتب العلمیۃ بیروت	ذم الھویٰ	دارالمعرفۃ بیروت	ابن ماجہ
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارالمعرفۃ بیروت	المستدرک
دارالکتب العلمیۃ بیروت	اتحاف السادۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الفردوس
دارالکتب العلمیۃ بیروت	مستطرف	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الترغیب والترہیب
دارالفکر بیروت	عالمگیری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	التیسیر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہارِ شریعت	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مراٰۃ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مدنی وصیت نامہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تاریخ بغداد
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش	دارالفکر بیروت	تاریخ دمشق

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **''फ़िक्रे मदीना''** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। ان شاء الله عزوجل '' अपनी इस्लाह़ के लिये **''मदनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। ان شاء الله عزوجل

ISBN
0133124

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786
E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net